ऐतिहासिकता की मर्यादाओं में 'छावा'

● दामोदर खड़से

मराठी में ऐतिहासिक महापुरुषों पर कई उपन्यास लिखे गये हैं. शिवाजी के दादा पर 'आदिपर्व' उपन्यास प्रमिला जोग ने लिखा. मालोजी राजे छत्रपति शिवाजी के दादा थे. मुगलों से लोहा लेने में उन्होंने बहुत संघर्ष किया. यह माना जाता है कि शिवाजी को अपनी माता से हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की प्रेरणा मिली. इसके पीछे मालोजी राजे के शौर्य और पराक्रम की विरासत रही है. बाद में, शिवाजी पर साहित्य में कई उपन्यासकारों ने उनके शौर्य-कीर्ति की गाथाएं संजोयी हैं. ऐतिहासिक पौराणिक उपन्यासकार शिवाजी सावंत ने 'मृत्युंजय' नामक उपन्यास में कर्ण को केंद्र में रखकर अन्याय, शोषण, उपेक्षा और अपमान में जीते हुए एक नायक के जीवन को नया आयाम दिया. फिर कृष्ण के आख्यान को शिवाजी सावंत ने 'युगंधर' नामक उपन्यास में पिरोया. 'ऐसे लोग, ऐसी बातें' नामक रेखाचित्र में उन्होंने कई जीवित-चित्र उकेरे. शिवाजी सावंत का एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें उन्होंने सम्भाजी की शौर्य-कथा बयान की है. शिवाजी महाराज के पुत्र सम्भाजी इतिहास में अपनी वीरता, समर्पण और बलिदान के लिए विख्यात रहे हैं. शिवाजी महाराज की विरासत और अपनी सूझबूझ से सम्भाजी ने हिंदवी स्वराज्य की पताका बहुत उल्लेखनीय ढंग से फहरायी. उपन्यासकार शिवाजी सावंत ने सम्भाजी का संघर्ष अपनी औपन्यासिक कृति 'छावा' में बखूबी उजागर किया है. 'छावा' यानी शेर का बच्चा, शूर, वीर, निडर, शिवाजी महाराज का बेटा यानी 'छावा'– सम्भाजी!

शिवाजी सावंत ने 'छावा' उपन्यास लिखा और उसका नाट्य-संस्करण लिखकर मंच पर जीवेन 'छावा' उपस्थित किया. इस ऐतिहासिक उपन्यास में छत्रपति शिवाजी के सुपुत्र सम्भाजी के जीवन-संघर्ष का अद्भुत और रोमांचकारी चित्रण है. इस उपन्यास को एक ग्रंथ के रूप में निर्माण करने के लिए उन्हें बारह वर्ष लगे. तमाम स्थानों और घटनाओं के उल्लेख, व्यापक बयान सम्भाजी की कर्मठता और स्वराज्य के प्रति समर्पण को हूबहू दर्शाते हैं. ऐतिहासिक मराठी उपन्यासों में यह माना जाता है कि रणजीत देसाई की

'स्वामी' के बाद शिवाजी सावंत द्वारा रचित 'छावा' एक महत्त्वपूर्ण चरण के रूप में उभरकर आया है.

'छावा' के संदर्भ में शिवाजी सावंत का मंतव्य अत्यंत सटीक है. वे कहते हैं, 'सच्ची ऐतिहासिक कथा, ऐतिहासिक संदर्भ की प्रथम सीढ़ी पर खड़ी करनी होती है. सारे संदर्भ अलिप्त भावना से जांचने-परखने चाहिए. जहां इतिहास मूक हो जाता है वहां तारतम्यता से उसे आवाज़ देनी होती है. उस कालखंड के रीति-रिवाज़, बोली-भाषा, वस्त्र-पहनावा, वातावरण, व्यवस्था-नीति आदि को जीवंत करना होता है. सबसे कठिन निरूपण होता है, ऐतिहासिक मन... वह तितली के पंख की तरह होता है. बहुत सावधानी से उसे उकेरना होता है...'

शिवाजी सावंत पौराणिक और ऐतिहासिक पात्रों के साथ संवाद करते समय उस कालखंड का इतिहास, संस्कृति, सामाजिक स्थिति, प्रथा-परम्पराएं, नीति, भाषा-पहनावा, धार्मिक-राजनैतिक प्रचलन, आदर्श आदि का सूक्ष्म चित्रण करते हैं. ऐसा लगता है पाठक स्वयं इतिहास में विचरण कर रहा है. 'छावा' उपन्यास में लेखक ने मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से सम्भाजी महाराज के जीवन का व्यापक अध्याय पन्ना-दर-पन्ना उकेरा है. पूरा उपन्यास रोचक और शैली की दृष्टि एक उत्कृष्ट कृति के रूप में उभरकर आया है. उनकी भाषा अत्यंत भावपूर्ण और कालानुरूप है. 856 पृष्ठों के इस उपन्यास में सम्भाजी के जन्म से बलिदान तक की कहानी समेटी गयी है.

शिवाजी महाराज के निधन के बाद छत्रपति के राजघराने में जो राजनीति हुई उसका मार्मिक चित्रण करते हुए परिवार की कलह, संघर्ष, राजगद्दी की खींच-तान जैसे प्रसंगों का सजीव चित्रण उपन्यास में है. सम्भाजी ने औरंगजेब का सामना किस तरह किया... संघर्ष, युद्ध, कूटनीति जय-पराजय और नीति-अनीति का आख्यान इसमें है. दरअसल यह सम्पूर्ण कथा शोकांतिका ही है. शिवाजी सावंत ने अपने नायक के धैर्य, शौर्य, संघर्ष, जन-प्रतिबद्धता, स्वराज्य की रक्षा करते हुए एक विशिष्ट नायक की बलिदान-कथा इसमें बुनी है.

बाद में शिवाजी सावंत ने इस महाउपन्यास को नाटक में रूपांतरित किया. परंतु, ऐसा लगता है कि शिवाजी सावंत की भाषा और शैली इतनी दृश्यात्मक है कि पाठक दर्शक बन जाता है– अनायास... टूटे आभूषण को लेकर वे येसूबाई से वार्तालाप करते हैं– 'येसू, आभूषण टूट जाये, तो बनवाया जा सकता है. परंतु, मनुष्य का क्या किया जाय? खैर जाने दो. तुम यहां अत्यंत सावधानी से रहो. औरंगजेब की फौजें चारों ओर फैली हुई हैं. महाराज ने बालराजा की पीठ प्यार से थपथपायी. येसूबाई ने उन्हें देवी भवानी का चरणामृत दिया, तो उसे पीते

हुए वे भवानीबाई से कहने लगे, 'देखो, तुम्हारा चरणामृत पी रहे हैं हम.' भवानीबाई लजा गयी. येसूबाई ने बालराजा को अपनी बायीं ओर और भवानीबाई को दायीं और अपने गले से लगा लिया. फिर राजसभागृह में उपस्थित लोगों के साथ वे राजगद से विदा हुए.'

यदि लेखक हूबहू वैसा ही लिखता है तो वह साहित्य नहीं, इतिहास होने का खतरा उठाना है और यदि कल्पना की उड़ान भरता है तो या तो वह इतिहास से खिलवाड़ करता होता है.

महाराष्ट्र के किलों, मराठा सरदारों, राज-परिवार के सदस्यों, कवियों, विशिष्ट व्यक्तियों, वस्त्र-आभूषणों, रीति-रिवाजों, आदर्शों-नीतियों का बहुत मुखर वर्णन इस उपन्यास में है. औरंगजेब की क्रूरता, दमन, शोषण, आतंक के शब्दचित्र हृदय-विदारक हैं. औरंगजेब ने भयंकर यातनाओं के साथ सम्भाजी का अंत किया. बंदी बनाया. बारह दिन तक शारीरिक-मानसिक यातनाएं दीं. उनके कवि-मित्र, युद्ध-साथी को भी बंदी बनाकर अंग-भंग किया गया. उन दोनों की आंखें निकाल ली गयीं और भयानक यातनाओं के साथ उनको मृत्यु तक पहुंचाया गया. शिवाजी सावंत ने ये दृश्य बहुत भावुकता और निरपेक्षता से चित्रित किया है.

शिवाजी सावंत केवल मराठी लेखक के रूप में ही सीमित नहीं रहे, बल्कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होकर अखिल भारतीय ख्याति अर्जित करते रहे. उपन्यास 'छावा' भारतीय ज्ञानपीठ से हिंदी में प्रकाशित है, जिसके दर्जनों संस्करण प्रकाशित हुए हैं. 'छावा' का हिंदी नाटक संस्करण ज्ञानपीठ से ही 'संघर्ष' शीर्षक से प्रकाशित है. इस महाकाव्यात्मक नाटक में एक मराठा शूर राजा अपने मूल्यों और अपनी आस्थाओं को बचाये रखने के लिए साक्षात मृत्यु का वरण करता है.

सम्भाजी राजे संघर्षशील योद्धा तो थे ही, वे काव्य-प्रेमी और स्वयं 'बुधभूषणम्' के रचयिता भी रहे. उनकी पत्नी सोयराबाई अण्णाजी दत्तो, सुरनीस, प्रह्लाद विराजी-न्यायाधीश, हम्मीरराव-सेनापति, कवि-कुलेश–छत्रपति सम्भाजी के अष्टप्रधान मंडल के छंदोगामात्य– कनौज निवासी, सम्भाजी को आगरा से छुड़ाने की मुहिम में सहभागी– कवि-मंत्री. साथ ही कई पात्रों के साथ नीलोपंत, रूपाजी भोसले, बहिर्जी, माल्होजी घोरपड़े, धाराऊ, गणोजी शिर्के, येसाजी दाभाडे, शहजादा अकबर, येसूबाई, रघुनाथ पंत, करीम-रसूल, मुकर्दव खां, इसलास खां, रुहुल्ला खां, बर्दीधार और औरंगजेब जैसे ऐतिहासिक पात्रों का कालखंड और व्यक्तित्व को साकार करने का बीड़ा शिवाजी सावंत ने उठाया. अत्यंत

सार्थकता और रोचकता के साथ इतिहास के पन्नों से रंगमंच पर जीवंत कर पात्रों को ले आये.

शिवाजी सावंत ने इस ऐतिहासिक नाटक में पूरा इतिहास खड़ा कर दिया. संवादों और दृश्यों के माध्यम से दर्शकों सदियों पीछे ले जाकर अपने नायक सम्भाजी को औरंगजेब के सामने जैसा संवाद लिखा है, उससे नायक की शौर्यगाथा बहुत प्रभावी बनकर उभरी है:–

औरंगजेब : सम्बा, तेरे अब्बाजान ने– उस काफिर सिवा ने– उस अकेले ने पहचाना था सही-सही हमें-आगरे में! मान लिया– तू उसका सच्चा बेटा है– आज तूने भी पहचान लिया सही-सही हमें. किसी भी तरह का लालच दिखाकर तो नहीं– हमने यदि जबरदस्ती तुझे 'इस्लाम' मानने के लिए मजबूर किया तो-तो बोलो क्या करोगे, जवाब दो क्या करोगे?

सम्भाजी : ...तो हिंदुओं का बेरहम कत्ल करनेवाले, उन पर जुल्मी जज़िया लादनेवाले, कुरान पर कालिख पोतनेवाले औरंगजेब-आलमगीर-तो सांस फेंक देने से हम सब अपनी जान ही शिवलिंग पर अर्पण कर देंगे!! हाथ-पैर, देह न भी रहे तब भी अपनी सांस, जो हमारी है, सिर्फ हमारी-हमारे ही कब्ज़े में है– किसी– भी क्षण उतनी ही ताकत से हम उसे 'रोक' सकते हैं.' (नाटक संघर्ष - पृष्ठ 108)

किसी चिर-परिचित ऐतिहासिक पात्र पर उपन्यास या नाटक लिखना अत्यंत चुनौती भरा काम होता है, क्योंकि पाठकों-दर्शकों के मन में उस पात्र की प्रतिभा विद्यमान रहती है. यदि लेखक हूबहू वैसा ही लिखता है तो वह साहित्य नहीं, इतिहास होने का खतरा उठाना है और यदि वह अपनी कल्पना की उड़ान भरता है तो या तो वह इतिहास से खिलवाड़ करता होता है या अपनी सोच लादने की कोशिश करता है. साहित्यकार इतिहासकार नहीं होता, वह पुरानी घटनाओं को दुहराने का काम नहीं करता; बल्कि कई बार इतिहास मौन हो जाता है, जानकारी लुप्त हो जाती है, घटना भटक जाती है; साहित्यकार इस शून्य अंतराल को जीवित करता है. पात्रों के साथ न्याय करता है. टूटी कड़ियों को जोड़ता है साहित्यकार; इसीलिए कभी-कभी वह सत्य के अधिक करीब भी पहुंच जाता है. 'छावा' उपन्यास में शिवाजी सावंत ने सम्भाजी विषयक ऐतिहासिकता की सारी मर्यादाएं अविच्छिन्न रखकर पात्रों को न्याय दिया है और नाटक में रूपांतरित अपनी कृति को जन-जन तक सीधे पहुंचाया है. सच तो यह है कि कल्पना और इतिहास का सामंजस्य ही ऐतिहासिकता और साहित्य का संतुलन रखकर साहित्य की इस विधा को सार्थक बनाता है. जब भी, जहां भी, संतुलन उगमगाया है, साहित्य और इतिहास दोनों की गरिमा कम हुई है. ❑